कृषि कौशल को निखारना है मकसदः मनोज अग्रवाल

एग्रीकल्चर मैनेजमेंट कार्यक्रम का अग्रणी संस्थान बना NIAM

कई दशक पहले एग्रीकल्चर को घाटे का सौदा मान लिया जाता था, यहां तक किसानों ने भी इसे अपनी आने वाली पीढ़ियों को पारम्परिक तरिके से नहीं सौंपा। इसके परिणास्वरूप खेती किसानी में लोगों को रूझान लगातार कम होता जा रहा है। लेकिन नई पीढ़ी ने खेती को इनोवेशन और तकनीक से जोड़कर इससे सफलता के कई रास्ते निकाल लिए।

आज युवाओं के लिए खेती न सिर्फ रोजगार देने वाली है बल्कि कई सफल स्टार्टअप्स से खेती किसानी की तस्वीर ही बदल गई है। देश के कई एग्रीकल्चर संस्थानों ने एग्री स्टार्टअप्स को भविष्य की खेती का आधार बताया ताकि एग्रीकल्चर की पढ़ाई करने वाले या इससे जुड़े लोग इसमें करियर की संभावनाओं को तलाश कर सके। ये कहना है सांगानेर स्थित नेशनल इंस्टिट्यूट ऑफ एग्रीकल्चर मार्केटिंग (नियाम) के मुख्य कार्यकारी अधिकारी मनोज अग्रवाल का। हैलो किसान ने उनसे विशेष बातचीत की और जाना कि आखिर कृषि कौशल को भविष्य की आधारशिला कैसे बनाया जा सकता है।

नियाम और आपके इन्क्यूबेशन सेल की कार्यप्रणाली कैसी है?

नियाम कृषि उद्यमिता और कृषि विपणन का अग्रणी संस्थान बनकर देश में उभरा है। हमारी कार्यप्रणाली से प्रेरित होकर कई अग्रणी संस्थानों ने हमें फॉलों करना शुरू किया है। अब समय बदल रहा है हमने इन्यूबेटर्स की मदद से भविष्य की खेती और आसान खेती की प्रणाली विकसित करने की योजना बनाई है। इसमें हमारा ध्येय है कि पॉलिसी, रिसर्च, कंसल्टेंसी, एडवोकेसी एंड एजुकेशन और ट्रैनिंग पर लोगों का ध्यान खींचा जाएं। इसी के तहत इन्क्यूबेशन सेल तैयार किया गया है। हमें खुशी है कि देश भर से आने वाले लोगों में हम हर साल 40-50 लोगों को स्टार्टअप के लिए ट्रेनिंग दे रहे है, ट्रैनिंग के साथ ही स्टार्टअप्स को फंडिंग भी दे रहे है।

स्टार्टअप्स में फंडिंग और रजिस्ट्रेशन का क्या क्राइटेरिया है?

सबसे खास बात यह है कि इसके लिए कोई एज लिमिट नहीं है।18 साल के ऊपर वाले व्यक्ति अपना स्टार्टअप एनरोल कर सकते है। इसमें एग्री स्ट्रीम या पढ़े लिखे हो ये भी जरूरी नहीं है। इन सब के अलावा स्टार्टअप किसी का भी हो सकता है। हमनें संस्थान से कई प्रगतिशील किसानों को भी फंडिंग की है। कृषि स्टार्टअप गतिविधियों के लिए हम वर्तमान में 4 राष्ट्रीय संस्थानों का मार्गदर्शन भी कर रहे है। साथ ही 500 से अधिक स्टार्टअप्स को प्रशिक्षित कर चुके हैं।एग्रीकल्चर स्टार्टअप में बेहतरीन योगदान के लिए हमें एमआईटी वर्ल्ड पीस यूनिवर्सिटी की तरफ से सर्वश्रेष्ठ इनक्यूबेटर के रूप में सम्मान मिला है। इसके अलावा स्मार्ट इन्क्यूबेटर ऑफ द ईयर का भी खिताब मिल चुका है।

एग्री स्टार्टअप में किस तरह की चुनौतियों का सामना करना पड़ता है?

एग्रीकल्चर स्टार्टअप के मामलों में बहुत ज्यादा पुराना नहीं है, ऐसे में सबसे बड़ी समस्या है प्रोफेशनलिज्म की, जिसकी वजह से बहुत ज्यादा हैंड हॉल्डिंग करनी होती है। सबसे जरूरी बात यह है कि स्टार्टअप ईकोसिस्टम में सर्टिफिकेशन और वेलिडेशन में टाइम लगता है, जिसे थोड़ा रिलेक्स करने की जरूरत है। हम जल्द ही इस काम को पूरा कर लेंगे। इसके अलावा स्टार्टअप की पॉलिसी को थोड़ा शिथिल करने की जरूरत है।

एग्री स्टार्टअप में किस तरह की संभावनाओं पर सबसे ज्यादा जोर है?

एग्रीकल्चर स्टार्टअप के मामलों में हमारा देश दिनों-दिन प्रगति कर रहा है। कृषि में कई सारे स्टार्टअप्स में सप्लाई चैन और हाईटेक फार्मिंग है। सैटेलाइट का इस्तेमाल भी व्यापक स्तर पर किया जा रहा है। अब वक्त आ गया है कि हम एग्रीकल्चर को बिजनेस मॉड्यूल में तब्दील कर दे। हमारा सकल घरेलू उत्पादों में भी 18 फीसदी का बहुत बड़ा योगदान है। हमारे यहां डबलिंग फार्मिंग का भी एक बड़ा रोल है।

किसानों को सीधा फायदा पहुंचाने की कोई योजना या कोई प्रकल्प है?

किसानों को स्टार्टअप से जोड़ने के लिए हमने श्री कर्ण नरेन्द्र कृषि विवि में हमारा एक सेंटर शुरू किया है। जहां किसान जाकर प्रशिक्षण से जुड़ी तमाम जानकारी हासिल कर सकते है। इसके अलावा हम कृषिगत संस्थानों और शिक्षण संस्थाओं के लिए हम एक नॉलेज पार्टनर के तौर पर जुड़े हुए है, ताकि उनकी समस्याओं पर त्वरित समाधान दिया जा सके।